समकालीन कविता : स्वरूप और वैशिष्ट्य

Dr. Surinder Kumar

Asst. Prof., Hindi Department, Guru Nanak Khalsa College, Karnal

---

'समकालीन कविता' हिन्दी साहित्य में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। इस काव्यधारा को अनेक नामों से पुकारा गया जैसे–अकविता, साठोत्तरी कविता, सहज कविता, बीट कविता, ठोस कविता, नूतन कविता, युयुत्सा कविता, रूपाम्बरा कविता आदि। इसकी समय–सीमा को लेकर भी विचारकों में कापफी मतभेद हैं। कुछ विचारक 1950 ई॰ से 1980 ई॰ तक इस कविता का समय मानते हैं। कुछ 1965 से 2000 ई॰ तक इसकी समय–सीमा निर्धारित करते हैं। 1960–70 के आसपास इसके लिए अन्य नाम भी उभरकर सामने आये तथा–आधुनिकता बोध की कविता, विचार कविता, समकालीन बनाम उत्तर आधुनिकतावाद कविता आदि।

आरंभ से ही समकालीन कविता में असंतोष, अस्वीकृति और विद्रोह का स्वर बड़े ही सापफ शब्दों में उभरकर सामने आता है। 1965 ई॰ के आसपास की कविता अपने पूर्व स्वरूप से कुछ अलग दिखाई पड़ती है, तब से लेकर आज तक की कविता को वास्तव में 'समकालीन कविता' का नाम दिया जा सकता है। 'समकालीन' शब्द अपने आप में एक व्यापक शब्द है जो व्यक्ति, साहित्य और काल तीनों से गहरा सम्बन्ध रखता है। साधारण शब्दों में कहा जा सकता है कि–वर्तमान समय में जो भी घटित हो रहा है, वह समकालीन ही है।

इसका शब्दकोशीय अर्थ है–'एक ही समय में रहने या होने वाला'1

अर्थात् अपने समय से जुड़े रहने के भाव को 'समकालीन' कहा जा सकता है।

विशम्भर नाथ उपाध्याय 'समकालीन कविता' के सम्पूर्ण स्वरूप को अपने इन शब्दों में व्यक्त करते हैं–फ्समकालीन कविता अपने समय के मुख्य अन्तर्विरोधों और द्वन्द्वों की कविता है। इसे पढ़कर वर्तमान का बोध हो सकता है, क्योंकि उसमें जीते, संघर्ष करते, लड़ते, बौखलाते, तड़पते, गरजते तथा ठोकर खाकर सोचते वास्तविक आदमी का परिदृश्य है। आज की कविता अपने गत्यात्मक रूप में है। ठहरे हुये क्षण या क्षणांश के रूप में नहीं। यह काल क्षण की कविता का नहीं काल–प्रवाह, आघात और विस्पफोट की कविता का है। इसी से समकालीन लम्बी कविताओं की बुनावट तरंगों की तरह है। उनमें अनुपात, अवयव–संतुलन, सामंजस्य नहीं है, क्लासिक पूर्णता नहीं है, परिष्कृति नहीं है, उनमें मुक्तिबोध चट्टानें, अन्धड़, लू–लपट, गर्जन, उपहास, व्यंग्य, लताड़ और मारधाड़ है। जीवन और मूल्यों की अमूर्त्त धारणाओं के स्थान पर सताये हुये लोगों का विवेचन और विद्रोह है, द्रोह है।2

इस प्रकार तत्कालीन 'समकालीन कविता' का स्वरूप पूर्णतः स्पष्ट हो जाता है। सन् 2000 ई॰ के बाद की कविता भी अलग–सा स्वरूप लेकर चलती दिखाई देती है। वास्तव में आज की समकालीन कविता भौतिकतावाद, मशीनीकरण, बाजारवाद, व्यक्तिगत स्वार्थों से परिपूर्ण दिखाई देती है। समकालीन कविता के आरंभिक दौर में कवियों का मुख्य उद्देश्य देश की तत्कालीन परिस्थितियों का चित्राण तथा मानव–मात्रा के व्यथित मन की पीड़ा को व्यक्त करना था। 'समकालीन कविता' के आरंभिक कवियों में डॉ. नवल किशोर, विजय देव नारायण सहाय, कुंवर नारायण, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, रघुवीर सहाय, केदारनाथ सिंह, श्रीकांत वर्मा, राजकमल चौधरी व धूमिल का नाम लिया जाता है। 'समकालीन कविता' के अन्य कवियों में लीलाधर जगूड़ी श्याम प्रसाद, जगदीश चतुर्वेदी, दूधनाथ सिंह, बलदेव वंशी, नरेन्द्र मोहन, चन्द्रकांत देवताल, जगदीश गुप्त, मुक्तिबोध, अशोक वाजपेयी, भवानी प्रसाद मिश्र, आलोक धन्वा आदि के नाम भी गिनवाये जा सकते हैं। वास्तव में समकालीन कविता के कवियों की संख्या कापफी ज्यादा है और ये सभी कवि अपने–अपने विचारानुसार काव्य–रचना में लगे हुये हैं।

समकालीन कविता का वैशिष्ट्य –

समकालीन कविता का वैशिष्ट्य इसी बात में देखा जा सकता है कि–ये अपने समय की प्रत्येक परिस्थिति तथा व्यक्ति के मन का यथार्थ शब्दों में वर्णन करती चलती है। यह देश तथा काल के प्रत्येक पक्ष को अपने में समेटती है। समकालीन कविता के वैशिष्ट्य को निम्नलिखित आयामों के अन्तर्गत देखा जा सकता है–

1. **विषय की व्यापकता** – समकालीन कविता की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विशिष्टता यह है कि–इस समय के कवियों ने मानव–जीवन के प्रत्येक पक्ष को अपने काव्य द्वारा बड़े ही यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया। राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, वैयक्तिगत, वैज्ञानिक आदि सभी पहलुओं को बड़ी ही बारीकी से जाँचा–परखा और जन–सामान्य के समक्ष ज्यों का त्यों प्रस्तुत भी किया।

2. **राजनीतिक चेतना का उद्घाटन** – समकालीन कविता के कवियों ने राजनीतिक भ्रष्टाचार, दल–बदल की नीतियाँ, कुर्सी का मोह, जनता को लूटने की नीति, वोट बैंक आदि सभी के विषय में जन–साधारण को परिचित करवाया, साथ ही उन्हें जागरूक बनने की प्रेरणा भी दी।

गिरिजाकुमार माथुर कहते हैं–

फसत्ता के मन में जब जब पाप भर जायेगा

झूठ और सच का सब अन्तर मिट जाएगा

न्याय असहाय, जोर जब्र खिलखिलायेगा

जब प्रचार ही लोक मंगल कहलाएगा

तब हर अपमान।

क्रांति का राग बन जायेगा।3

इसके साथ ही माथुर जी ने पीड़ित जन–साधारण को आशा और विश्वास का अमर–गीत भी प्रदान किया। 'होंगे कामयाब' कविता से कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं–

फहोंगे कामयाब

होंगे कामयाब

हम होंगे कामयाब एक दिन

मन में है विश्वास

पूरा है विश्वास

हम होंगे कामयाब...एक दिन।4

3. **सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति** – इन कवियों ने तत्कालीन समाज की सच्चाई को अपने काव्य का आधार बनाया। संघर्ष करती, पीड़ित, व्यथित जनता के दुःख को अपनी कविताओं के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान की।

रघुवीर सहाय कहते हैं–

फएक भयानक चुप्पी छाई है समाज पर

शोर बहुत है पर सच्चाई से कतरा कर

गुजर रहा है

एक भयानक एका बांधे है समाज को

कुछ न बदलने के समझौते का है एका।5

इसके साथ ही सहाय जी जन–साधारण को प्रेरणा देते हुए उन्हें चुनौती भी देते हैं।

'पहले बदलो' कविता में रघुवीर सहाय कहते हैं–

फउसने पहले मेरा हाल पूछा

पिफर एकाएक विषय बदलकर कहा आजकल का

समाज देखते हुये मैं चाहता हूँ कि तुम बदलो

पिफर कहा कि अभी तक तुम अयोग्य साबित हुये हो।

इसलिय बदलो,

पिफर कहा पहले तुम अपने को बदलकर दिखाओ

तब मैं तुमसे बात करूँगा।6

इसी प्रकार अन्य कवियों ने भी न केवल सामाजिक यथार्थ का चित्राण अपनी कविताओं में किया बल्कि जन–साधारण को आशा और विश्वास का संदेश भी दिया।

4. **ईश्वर और धर्म सम्बन्धी वर्णन**– समकालीन कविता के अंतर्गत कवियों ने जन साधारण की आस्था, विश्वास, धर्म, धार्मिक रीति–रिवाज, आडम्बर, ढोंग, अंधविश्वास, आदि का भी खुलकर वर्णन किया है। इस समय की जनता के पास ईश्वर की शरण में जान के अतिरिक्त मानो कोई रास्ता है ही नहीं। ये कार्य भी विचित्रा ढंग से होता है। ईश्वर प्राप्ति के लिये लोग क्या–क्या नहीं करते। विजयदेव नारायण साही कहते हैं–

फतलाश, तलाश, अनवरत अन्तहीन तलाश

जो पेड़ों की डालों में

सूने मकानों में

खण्ड–खण्ड चट्टानों में

भूरि चिड़िया की तरह उड़ती पिफरती है।7

एक अन्य स्थल पर साही जी का कहना है–

फओ मेरे निर्माता

देते तुम मुझको भी

हर उलझी गुत्थी का

ऐसा ही समाधान

या एसा दीदा ही

अपना सब किया कहा

औरों पर थोपथाप

बन जाता दीप्तिवान।8

उपर्युक्त दोनों काव्यांशों में साही जी ने तत्कालीन जनता की मनोविज्ञानिक सोच को उद्घाटित करने का सपफल प्रयास किया है। इसके साथ ही जनता के धार्मिक विचार भी अग्रप्रस्तुत हो उठते हैं–

5. **विपन्नता की गहन अनुभूति**– समकालीन कविता की एक

मुख्य विशिष्टता ये भी है कि–तत्कालीन कवियों ने हर प्रकार की विपन्नता को हृदय से अनुभव किया तथा उसे अपने काव्य में महत्त्वपूर्ण स्थान भी दिया। तत्कालीन आर्थिक विपन्नता को भी इस काल के कवियों ने अपने काव्य में मुख्य स्वर प्रदान किया है।

डॉ. जगदीश गुप्त ने अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किये हैं–

फमेरे तन पर वस्त्रा रेशमी

औरों के तन रहें उघारे।

समासीन राजन्य वर्ग हो,

पिफरें और सब मारे–मारे।

यह मुझको स्वीकार नहीं था,

मेरा जीवन कलान्त हो उठा।

मेरा चित्त अशान्त हो उठा।9

इस प्रकार गुप्त जी ने केवल जनता के दुःख को समझा है बल्कि स्वयं भी वो पीड़ा का अनुभव करते हैं।

भवानी प्रसाद मिश्र जी भी जनता का पक्षधर बनकर अपने विचार इस प्रकार व्यक्त करते हैं–

फकितना नाचा हूँ तुम्हारे इशारों पर

नौ मन तेल तक जुटाया है मैंने

खुद अपने ही लिये।10

वैयक्तिगत साहस की विपन्नता का अत्यन्त यथार्थवादी चित्राण विजयदेव नारायण साही की इन पंक्तियों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है–

फअकेला पीला पफूल

अनिश्चित चिड़िया की तरह

पंख खोल–खोल कर रह जाता है

उड़ता नहीं।11

यहाँ 'पीला पफूल' जन–मानस का और 'चिड़िया' व्यथित मन का उत्कृष्ट प्रतीक हैं।

6. बिखरते सम्बन्धों का सजीव चित्राण– समकालीन कविता के कवियों ने मानव–जीवन के टूटते, कमजोर पड़ते, बिखरते परस्पर सम्बन्धों का बड़ा ही यथार्थ रूप अपने काव्य में व्यक्त किया है। सम्बन्ध चाहे वैयक्तिक हों, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, व्यावसायिक सभी को इन कवियों ने बहुत सुन्दर अभिव्यक्ति प्रदान की है।

विजयदेव नारायण साही अपनी कविता 'सुनसान शहर' में कहते हैं–

फमैं बरसों इस नगर की सड़कों पर आवारा पिफरा हूँ

वहाँ भी जहाँ

शीशे की तरह

सन्नाटा चमकता है

और आसमान से मरी हुई बत्तखें गिरती हैं।12

गिरिजा कुमार माथुर कृत निम्नलिखित पंक्तियों में यह बिखराव पूर्णतः स्पष्ट हो जाता है।

यथा– फराहें सभी अंधेरी हैं

ज्यादातर लोग पागल हैं

अपने ही नशे में चूर

वहशी हैं या गापिफल हैं

खलनायक हीरो हैं

विवेकशील कायर हैं

थोड़े से ईमानदार हैं।13

इस प्रकार माथुर जी ने इन पंक्तियों के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व के बिखरते सम्बन्धों का चित्राण पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है।

निष्कर्ष :

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि–तत्कालीन समाज का ऐसा कोई पहलू नहीं है जो समकालीन कवियों की पैनी दृष्टि से बच पाया हो। इस कविता की सबसे मुख्य और महत्त्वपूर्ण विशेषता विषय की व्यापकता ही है। दूषित राजनीतिक वातावरण का चित्राण करना भी इन कवियों के उद्देश्य में सम्मिलित है। समाज में जागरूकता लाने, जन–साधारण को प्रेरित करने में भी समकालीन कवियों ने अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मानवीय–मूल्यों के विघटन के प्रति भी इन कवियों ने तत्परता दिखाई और जन–साधारण को भारतीय संस्कारों के मूल्यों की ओर लौटने का आग्रह किया। इसके अतिरिक्त उदारीकरण की नीति पर व्यंग्य, नई चेतना का उद्घाटन, ईश्वर और धर्म सम्बन्धी वर्णन, अलगावबोध की अभिव्यक्ति, समकालीन विसंगतियों का उद्घाटन, प्रकृति–वर्णन, यथार्थ चित्राण, काम–भावना का चित्राण, विदेशी वस्तुओं की बढ़ती मांग पर चिंता, नगरीय जीवन की विसंगतियों का उद्घाटन, सामाजिक चेतना का उद्घाटन, राजनीतिक जागरूकता, वास्तविक स्वतंत्राता की समस्या, तीव्र व्यंग्य, विचार–आंदोलन का प्रतिपादन, यथार्थवादी दृष्टिकोण, सांस्कृतिक विपन्नता, जन–सम्पर्क तथा जनकल्याण इन समकालीन कवियों के काव्य की महत्त्वपूण विशेषताएँ कही जा सकती हैं जो कि 'समकालीन कविता' के वैशिष्ट्य का आधार भी हैं।

संदर्भ सूची :

1. आबिद रिज़वी ;संकलन एवं सम्पादनद्ध, 'मेगा हिन्दी शब्दकोश', मारुति प्रकाशन, मेरठ, पृ. 972

2. रमेश सोनी ;संपा.द्ध, 'रिसर्च लिंक', अगस्त, 2010, पृ. 47

3. शेर जंग गर्ग ;संपा.द्ध, 'हमारे लोकप्रिय गीतकार–गिरिजाकुमार माथुर', वाणी प्रकाशन, 21–ए, दरियागंज, नई दिल्ली–110002, संस्करण 2002, पृ. 97

4. शेर जंग गर्ग ;संपा.द्ध, वही, पृ. 54

5. सुरेश शर्मा ;संपा.द्ध, रघुवीर सहाय–एक था समय', राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., दिल्ली–110002, प्रथम सं.–1995, पृ. 26

6. सुरेश शर्मा ;संपा.द्ध, वही, पृ. 40

7. विजयदेव नारायण साही, 'मछलीघर', वाणी प्रकाशन, 21–ए दरियागंज, नई दिल्ली–110002, दूसरा संस्करण–1995, पृ. 36

8. विजयदेव नारायण साही, वही, पृ. 43

9. जगदीश गुप्त, 'बोधि वृक्ष', वाणी प्रकाशन, 21–ए, दरियागंज, नई दिल्ली–110002, सं. 1989, पृ. 66

10. भवानी प्रसाद मिश्र, 'अंधेरी कविताएँ', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, प्रथम संस्करण– 1968, पृ. 45

11. विजयदेव नारायण साही, वही, पृ. 32

12. वही, पृ. 112

13. शेरजंग गर्ग ;संपा.द्ध, वही, पृ. 70